Shiksha Samvad International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© SSIJMR|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन

दीपक[1] डॉ. सुशील कुमार[2]
[1]शोधकर्ता. शिक्षा विभाग, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद, यू.पी., भारत
[2]प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद, यू.पी., भारत

सारांश :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन बदायूँ जनपद में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उद्देश्य रूप में स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों में क्षेत्र के आधार पर अध्ययन करने का निश्चय किया। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु बदायूँ जनपद के 120 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। शोधार्थी ने अध्ययन हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया। निष्कर्ष रूप में स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मूल शब्द: *स्नातक स्तर विद्यार्थी, सर्वेक्षण विधि, इण्टरनेट, अभिरूचि, यादृच्छिक विधि, स्वनिर्मित मापनी।*

प्रस्तावना

मानव के विकास का मूल आधार शिक्षा है। इसके द्वारा ही व्यक्ति समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। वास्तव में यह, वह सब प्राप्त करने में व्यक्ति की सहायता करती है जिसके वह योग्य होता है और जिसकी वह आकांक्षा रखता है। इसके कार्यों को सीमा में बाँधना कठिन है।

हम सभी इस तथ्य से भिज्ञ है कि मानसिक विकास का सीधा सम्बंध विचारों से होता है और विचारों का भाषा से, भाषा ओर विचारों का विकास शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव होता है। शिक्षा अनेक मानसिक शक्तियों जैसे, स्मृति, निरीक्षण, कल्पना, तर्क और विवेक का विकास करती है।

उच्च शिक्षा का अर्थ सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विशद तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी, महाविद्यालयों लिबरल आर्ट कॉलेजो एवं प्राद्यौगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो ऐच्छिक होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते है।

वर्तमान में लगभग सभी स्कूलों व कॉलेजों में विद्यार्थियों व अध्यापकों की सहातार्थ कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाने लगा है। कम्प्यूटर द्वारा कोई भी विद्यार्थी किसी भी समय किसी भी विषय पर कम्प्यूटर में संग्रहीत आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकता है। कम्प्यूटर न केवल विद्यार्थियों बल्कि अध्यापकों की भी सहायता करता है विद्यार्थी कम्प्यूटर पर ग्राफ, स्लाइड आदि को बनाकर अपना ज्ञानवर्द्धन तथा फिल्म को देखकर अपना मनोरंजन

कर सकते है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर अत्यंन लाभप्रद तथा उपयोगी है। **'कम्प्यूटर का अर्थ है वह आधुनिक यंत्र जिसके द्वारा हर कार्य शीघ्र संभव हो जाता है।" --- मैकाइवर**

आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है जब भी मानव को किसी यांत्रादि की आवश्यकता हुई है उसने आवश्यकतानुसार यंत्रादि का अविष्कार किया है। आवश्यकता के कारण ही कालान्तर में आज कम्प्यूटर का अवष्किार हुआ है।

प्रारम्भिक अवस्था को जब मनुष्य गिनती नहीं जानता था तब वह पत्थर के टुकड़े, तीलियाँ आदि संकेतों के सहारे गिनीत का हिसाब रखता था। इन्हीं संकेतों ने कालान्तर में गिनती का रूप ले लिया। जब संख्याओं का अविष्कार हो गया तो गिनने की सुविधा हेतु कालान्तर में विभिन्न उपकरणों का विकास किया गया। गिनने को सुविधाजनक बनाने के लिए आज से तीन हजार वर्ष पूर्व चीन में अवेकस नाम उपकरण विकसित किया गया। यह गणना यंत्र हस्तचालित था। विपेज पास्कल ने सन् 1940 ई0 में पास्कलिन नामक उपकरण का अविष्कार किया जो केवल जोड़-घटाना कर सकता था।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शैक्षिक प्रगति के पीछे विज्ञान का ही हाथ है यह एक सर्वमान्य तथ्य है हमारी शिक्षा की वर्तमान प्रणाली पूर्णतः वैज्ञानिक है। शिक्षा में भी तकनीक का समावेश हो चुका है शिक्षा के जितने भी पक्षों का विकास हुआ है या हो रहा है उसके लिए शिक्षा को विज्ञान की आवश्यकता प्रतीत होती है। निम्नलिखित कारणो की दृष्टि से शोधकर्ता को उक्त शोधकार्य की आवश्यकता हुई।

शैक्षिक दृष्टि से - सामान्यता यह सोचा जाता है कि पाठ्यक्रम के अनतर्गत विज्ञान का स्थान मात्र कुछ ही औपचारिकताओं की पूर्ति हेतु ही है पर ऐसा नही है। विज्ञान ने प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा को प्रभावित किया है। आज शिक्षा के समतुल्य विज्ञान का भी अपना विस्तृत क्षेत्र है। उसका अपना स्थान एवं आवश्यकता है। आज शिक्षा के पुराने ढाँचे में परिवर्तन एवं नवीन पद्धतियों के विकास की बहुत ही आवश्यकता है। शिक्षा के इन लक्ष्यों की पूर्ति विज्ञान के माध्यम से ही सम्भव है।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास की दृष्टि से - आज विज्ञान सारे वातावरण पर पूर्णतः छाया हुआ है। अतः छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करना नितान्त आवश्यक है, जिससे कि वे अपने ज्ञानात्मक पक्ष को सबल बना सकें। तर्क एवं प्रयोग से समस्या का समाधान कर सकें एवं सत्यान्वेषण कर सकें।

विज्ञान ने मानव को समृद्धि से परिपूर्ण किया है, उसकी चेतना में नवीनता के प्रति जागरूकता का शंखनाद किया है। साथ-साथ आणविक शक्ति को भी प्रदान किया है। विज्ञान ने मानव जीवन के शैक्षिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सभी पहलुओं को संस्पर्श किया है। मानव जीवन का कोई भी पक्ष विज्ञान के प्रभावों से अछूता नहीं बचा है।

अतीत के आंगन में झाँकने से ज्ञात होता है कि सभ्यता के प्रगतिपूर्ण दौर में हमारा वर्तमान कितना भव्य है एवं भविष्य कितना स्वर्णिम है। आज हमारी संस्कृति प्राचीन संस्कृति की नींव पर अवश्य खड़ी है परन्तु आज यह उससे पूर्णता अलग है। मानव वैज्ञानिक खोजों एवं उनके दैनिक प्रयोगों पर दिन-प्रतिदिन निर्भर होता जा रहा है। वैज्ञानिक अविष्कारों की जानकारी में विज्ञान का माध्यमिक स्तर पाठ्यक्रम में स्था आवश्यक कर दिया है। विज्ञान एक कला भी है। वास्तविकता में विज्ञान एवं कला में कोई अन्तर नहीं है एक कलाकार किसी वस्तु का अतिसूक्ष्म से सौन्दर्य की दृष्टि से निरीक्षण करता है जबकि एक वैज्ञानिक तर्क एवं सत्यान्वेषण के उपरान्त सौन्दर्य के समीप पहुँचता है।

आज का युग विज्ञान और तकनीकी का युग है पिछले कई दशकों में विज्ञान-शिक्षण के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इसमें कोई सन्देह नही है कि विज्ञान का महत्व उसकी सामाजिक उपादेयता के कारण बढ़ा है। विज्ञान विषय पर यह दोषारोपण किया जाता है कि यह गूढ तथ्यों से भरा हुआ है तथा अध्यापक इस सरस बनाने में कोई विशेष रूचि नहीं दिखाते। लेकिन ऐसा कहना न्याय संगत नहीं है। छात्रों में संभवता विज्ञान के प्रति अरूचि का एकमात्र कारण प्राथमिक स्तर पर उनकी नींव का कमजोर होना पाया जाता है। विज्ञान की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि बालक को अपेक्षित सफलता

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

न मिलने पर उसकी उकताहत स्वभाविक है। लेकिन हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि छात्र की मन स्थिति का ठीक से शोधकार्य करके उसमें विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करे।

नन महोदय ने विज्ञान में रूचि के तीन प्रेरक बताए है Wonder Utility and Urge to Systematize फिर क्या कारण है कि हम इन प्रेरकों के उपयोग से अपने विषय को प्रभावी एवं रोचक नहीं बना सकते?

आज विज्ञान अपनी ऊँचाइयों के शिखर पर है। आज जिस आधुनिक सभ्यता में जीने पर हम गर्व, अनुभव करते है, आकाश को छूने एवं चाँद तारों पर पहुँचने की सुखद अनुभूति करते हैं।

परमाणु पर विजय की कल्पनामात्र से ही सिहर उठते हैं, इन सभी उपलब्धियों का श्रेय विज्ञान को ही है। आज विज्ञान के क्षेत्र में उथल-पुथल मची हुयी है तथा आधुनिक विज्ञान का विकास अत्यन्त गति से हो रहा है। विज्ञान ने इंजीनियरिंग के क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोड़ा है तथा इसी के सहयोग से इंजीनियरिंग के क्षेत्र में नित नई-नई शाखाओं का उदय हो रहा है। अतः आवश्यक है कि विज्ञान के पाठ्यक्रमों में आमूल चूल परिवर्तन किए जाएं। वर्तमान युग में विज्ञान का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में विज्ञान-शिक्षकों को विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि का विकास किया जाए जिससे विद्यार्थी विज्ञान विषय में रूचि ले सकें तथा हमारे देश के विकास से सहयोग करें तथा विज्ञान के इस क्रान्तिकारी युग के साक्षी बनें। आधुनिक युग में हम विज्ञान, वैज्ञानिक और वैज्ञानिक अविष्कारों के बारे में बड़ी रूचि से पड़ते, सुनते और बातचीत करते हैं। कुछ लोग विज्ञान को रहस्यमय समझते हैं और कुछ के लिए यह एक विचित्र जादू है जिसके द्वारा मानव जाति की सभी कठिनाइयों का अंत किया जा सकता है और केवल बटन दबाने मात्र से ही सुखदायी एवं आनन्दित जीवन व्यतीत किया जा सकता है। विज्ञान ऐसा कुछ भी नहीं है बलिक यह तो विश्व के ज्ञान का क्रमबद्ध रूप है।

जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता जाता है इसकी उपयोगिता भी बढ़ती जाती है और आधुनिक जगत ऐसे वैज्ञानिक ज्ञान के क्रियात्मक पक्ष पर निर्भर होता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वभाव को विकसित करने तथा लोगों में सामान्य जागरूकता के निर्माण, अन्तर्निवेश एवं इसे बनाए रखने के उद्देश्य से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास की प्रस्तुति तथा उद्देश्य एवं मानव कल्याण में उन्हें प्रयोग में लाना। विज्ञान विषय एवं विज्ञान की लोकप्रियता के लिए विद्यार्थियों की विज्ञान के प्रति राय जानना विद्यालयों में दी जा रही विज्ञान की शिक्षा को शोध के माध्यम से सम्पुष्ट करना और विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जिज्ञासा और वैज्ञानिक प्रयोग की भावना का जानना एवं बढ़ावा देना। विज्ञान के शोधकार्य द्वारा बच्चों में सामाजिकता के गुण का विकास होना चाहिए वे अपने इस वैज्ञानिक युग के समाज को ठीक प्रकार समझ सके। विवान का कोई सिद्धान्त किसी स्थान तक सीमित नहीं है परन्तु समाज के कल्याण में तथा सामाजिक रूचि में उसका विशेष हाथ है। विज्ञान के सिद्धान्त मनुष्य के जीवन को सफल बनाने में बहुत सहायक है। साथ ही विज्ञान मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और पहलुओं पर प्रकाश डालते है और उनमे सम्बन्ध स्थापित करते है।

विज्ञान को यदि उपयोगिता की दृष्टि से देखा जाए तो अन्य सभी विद्यालयों के विषयों में प्रमुख स्थान प्राप्त करेगा। हमारे कार्य करने तथा रहने सहने के ढंग सभी वैज्ञानिक साधनों पर आधारित होने लगे है। जिनका सम्बन्ध में हमे इस शोधकार्य के माध्यम से जानना आवश्यक है अतः इस शोधकार्य का यह भी उद्देश्य है।

समस्या कथन

स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

उच्च स्तरः उच्च स्तर से तात्पर्य शिक्षा के उस स्तर से है जहाँ विद्यार्थियों के स्कूली शिक्षा के पश्चात् महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में स्नातक एवं परास्नातक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

विद्यार्थी: विद्यार्थी से तात्पर्य उस बालक-बालिका से है जो विद्यालय में शिक्षकों के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते है।

इण्टरनेट: इण्टरनेट वह संसाधन है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कभी भी एवं कहीं भी अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है।

कम्प्यूटर: कम्प्यूटर वह इलेक्ट्रानिक मशीन है जिसके द्वारा हम किसी गणना अथवा अन्य किसी भी कार्य को सरलता एवं सहजता से कम समय में कर सकते है।

अभिरूचि: रूचि वह प्रेरक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल बदायूँ जनपद तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत स्नातक स्तर के महाविद्यालय के केवल 120 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

डा० वाई० चक्रधारा सिंह एवं सी अरुघती राय असि० प्रो० आई०सी०ए०आई० विश्वविद्यालय त्रिपुरा (मार्च 2023) में माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं पर इण्टरनेट के प्रति रूचि का शोधकार्य किया। इन्होने लिंग के आधार पर छात्र-छात्राओं में इण्टरनेट के प्रति कोई अन्तर नहीं पाया।

जुलाई (2023) में शोभा उपाध्याय ने अपने शोध शोधकार्य कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में इण्टरनेट के प्रति अरूचि का शोधकार्य किया। उन्होने अपने शोध शोधकार्य से निष्कर्ष निकाला कि कला संकाय तथा वाणिज्य संकाय के छात्रों में इण्टरनेट के प्रति अरूचि में सार्थक अन्तर नही है अर्थात कला संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी इण्टरनेट में कम रूचि रखते है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी कला संकाय की अपेक्षा इण्टरनेट के प्रति कम रूचि प्रदर्शित करते है।

सिंह (2023) ने परिकल्पनाओं के आधार पर ग्रमीण तथा शहरी छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवसायिक अभिरूचि का शोधकार्य किया। इस शोधकार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए-

1. ग्रामीण व शहरी छात्रों की रूचि साहित्यिक वैज्ञानिक, वाणिज्य, रचनात्मक, कृषि, समाज सेवा तथा गृह प्रबन्ध की ओर अधिक थी।
2. शहरी छात्रों की रूचि रचनात्मक तथा वैज्ञानिक व्यवस्था तथा ग्रामीण छात्रों की रूचि कृषि तथा वैज्ञानिक कार्यों में अधिक थी।
3. शहरी छात्राओं की रूचि वैज्ञानिक वर्ग में जबकि ग्रामीण छात्राओं की रूचि गृह विज्ञान एवं साहित्यक व्यवसाय में थी।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में बदायूँ जनपद की समस्त स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा बदायूँ जनपद की 120 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

अध्ययन का उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा परीक्षण करने के लिए ऑकड़ों का संग्रह किया गया तथा तत्पश्चात् इसका मध्यमान, मानक विचलन, टी-अनुपात द्वारा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच की गयी।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
ग्रामीण विद्यार्थी	65	90.41	19.34	1.65
शहरी विद्यार्थी	55	85.73	17.43	

शोध परिकल्पना पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का मध्यमान 90.41 तथा मानक विचलन 19.3424 और स्नातक स्तर के शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का मध्यमान 85.73 तथा मानक विचलन 17.43 है। ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान एवं मानक विचलन से अधिक है। टी-मान का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.65 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

जब इण्टरनेट का आविष्कार 42 वर्ष पूर्व लियोनार्ड क्लीनरॉक ने किया तब शायद ही यह उम्मीद की होगी कि यह विश्व का सर्वश्रेष्ठ सूचना तन्त्र बन जायेगा। ई-मेल, चैटिंग, शॉपिंग, पढ़ाई, लिखाई पत्रकारिता मुकदमें नीलामी से लेकर जनमत संग्रह व शिकायतें भी ऑन लाइन हो गई है। आज इण्टरनेट **"बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय"** का साधन बन गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में इण्टरनेट के प्रति रूचि की वर्तमान स्थिति में समीक्षा की गई है। आज इण्टरनेट सूचना व ज्ञान का प्रमुख स्त्रोत बन गया है। दुनिया **'गूगल शरणम् गच्छामि"** है।

प्रस्तुत शोध निष्कर्षों के परिप्रेक्ष्य में अभी भी विद्यार्थियों द्वारा इण्टरनेट के प्रयोग करने वालो की संख्या में वृद्धि की आवश्यकता है।

इस प्रकार पता चलता है कि रिसर्च में इण्टरनेट के अनेक फायदे है। यदि वास्तव में एक शब्द या वाक्य में इसके फायदों का उल्लेख किया जाये तो कहा जा सकता है इण्टरनेट रिसर्च के लिए उसी प्रकार है जैसे **"गागर में सागर**" भरना अर्थात् इण्टरनेट सूचनाओं का एक गहरा सागर है जिसमें कि बहुत छोटे रूप में ही सूचनाओं का संकलन किया गया है।

सुझाव :1. प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में अध्ययन क्षेत्र में बरेली जनपद के विद्यालयों को ही लिया गया है। भविष्य में अध्ययन की ओर विस्तृत रूप देकर सभी नगर क्षेत्र व ब्लॉकों के प्राथमिक विद्यालयों पर सम्पादित किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत लघु शोध में मात्र 6 विद्यालयों का न्यादर्श के रूप में चयन कर अध्ययन किया गया है। भविष्य में इसे और बड़े न्यादर्श पर सम्पादित कर प्रभावी व उचित परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।

3. प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में अध्ययन केवल प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों पर किया गया है। भविष्य में इसे अध्यापकों-अध्यापिकाओं पर सम्पादित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वेस्ट, जे०डब्ल्यू० (1963) रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, प्रिन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

2. हॉन, हस्ले एवं रिक स्टॉक (1994) दि इण्टरनेट कम्प्लीट रिफ्रेन्स, कैलिफोर्निया, मेक्ग्रहिल पब्लिकेशन्स।

3. हॉन, एच० (1997) इण्टरनेट कम्प्लीट रिफ्रेन्स, नई दिल्ली, टाटा मैग्राहिल पब्लिकेशन्स, कम्पनी, लिमिटेड।

4. सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजलि (1999) शैक्षिक अनुसन्धान विधियों, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।

5. दीवान पी० एवं शर्मा एरन (2001) आई०टी० इन इन्साइक्लोपीडिया डॉट कॉम, ई०-कॉमर्स, नई दिल्ली, पेन्टागन प्रेस।

6. धीमान, के0सी0 (2003) कम्प्यूटर साईस, नगीन प्रकाशन, मेरठ।

7. शर्मा, आर०ए० (2003) शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।

8. भारद्वाज, सौरभ (2004) कम्प्यूटर अध्ययन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

9. श्रीवास्तव, डी०एन० (2007) अनुसन्धान विधियों, साहित्य प्रकाशन, आगरा।

10. सक्सेना, एन०आर० स्वरूप एवं चतुर्वेदी शिखा (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

दीपक[1] डॉ. सुशील कुमार[2], "स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन *", Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.01-07, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

दीपक[1] एवं डॉ. सुशील कुमार[2]

For publication of research paper title

“स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में इण्टरनेट एवं कम्प्यूटर सम्बन्धित अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन”

Published in ‘Shiksha Samvad’ Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/